जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जून 2023 ।। अंक – 35 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

कृषि यंत्र बैंक ने
कृषि क्रांति का किया आगाज
(पृष्ठ – 02)

बच्चों की पढ़ाई में
मददगार बन रही विद्या दीदी
(पृष्ठ – 03)

धान्यक जीविका एग्री
प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, बेगूसराय
(पृष्ठ – 04)

कृषि यन्त्र बैंक से खेती को मिल रही रफ़्तार

आम तौर पर बैंक का मतलब रुपयों की जमा एवं निकासी ही समझी जाती है। लेकिन अब गांवों में कृषि कार्य के लिए उपयोग में लाए जाने वाले उपकरणों का भी बैंक खुल गया है। ये बैंक जीविका दीदियों द्वारा संचालित हैं। इन बैंकों द्वारा सस्ते दर पर कृषकों को हर मौसम में ट्रैक्टर समेत कृषि कार्य के अन्य उपकरण बाजार से कम दर पर उपलब्ध कराया जा रहा है। कृषि यांत्रिकीकरण बैंक कृषि विभाग के सहयोग से जीविका से संबद्ध संकुल स्तरीय संघ द्वारा संचालित किया जाता है। पहले जीविका दीदियों एवं ग्रामीणों को महंगे दर पर कृषि कार्य हेतु यन्त्र मिलता था। वह भी समय पर नहीं मिलता था। जिस कारण से समय पर रोपनी एवं कटनी नहीं हो पाती थी। यंत्रों की अनुपलब्धता खेती कार्य को महंगा बना देती थी। लेकिन जीविका के कारण अब परिस्थितियों में बदलाव आया है। कृषि कार्य में लगी जीविका दीदियों को कृषि यन्त्र बैंक से समय पर और उचित दर पर कृषि यन्त्र उपलब्ध हो रहा है। कृषि यंत्रों में ट्रैक्टर, रोटावेटर, कल्टीवेटर, चौफ कटर, पोटैटो प्लांटर, स्ट्रारिपर आदि किराए पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। जिससे संकुल संघों को भी प्रति माह 20 से 25 हजार का मुनाफा हो रहा है।

कृषि यन्त्र बैंक ने किसान जीविका दीदियों के जीवन में नए कृषि क्रांति का आगाज़ किया है। जीविका के संबल से कृषि यन्त्र बैंक स्थापित कर जीविका दीदियों ने खेती की राह आसान कर दी है। कृषि यन्त्र बैंक से रोपनी और कटनी के उपकरणों को अपेक्षाकृत कम किराया पर लेकर खेती कर रही हैं। राज्य में कुल 477 कृषि यन्त्र बैंक संचालित हैं। कृषि यन्त्र बैंक में उपलब्ध ट्रैक्टर समेत सभी यंत्रो के संचालन हेतु चालक के चयन का अधिकार सम्बंधित संकुल स्तरीय संघ को है।

समस्त लेन–देन का लेखांकन ससमय किया जाता है। लेखांकन पुस्तकें और मासिक प्रतिवेदन का संधारण बुक कीपर द्वारा किया जाता है। कृषि यन्त्र बैंक की स्थापना स्थानीय फसल चक्र और मांग के अनुरूप यंत्रों की खरीददारी की जाती है। कृषि यंत्रों की खरीददारी सामुदायिक अधिप्राप्ति नियमावली के अनुसार किया जाता है। कृषक श्रीमती रीता देवी बताती हैं कि–'जीविका के सहयोग से संचालित कृषि यंत्र बैंक से मेरे जीवन में बदलाव आया है।' खेतों में रोपनी के लिए बैंक द्वारा उपलब्ध कराये गए कृषि यन्त्र की मांग बढ़ गई है। कृषि यन्त्र बैंक उन क्षेत्रों में स्थापित किये जा रहे हैं जहाँ खेती–बारी की कम जानकारी एवं कृषि यंत्रों का उपयोग नहीं हो रहा है। कृषि यन्त्र बैंक स्थापित करने का एक मकसद यह भी है कि कृषकों को खेती से सम्बंधित जानकारी भी मिले और अत्याधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग करके किसान अपने खेत से अधिक से अधिक मुनाफा कमा सके। ग्रामीण कृषि यन्त्र बैंक की स्थापना का उद्देश्य भी यही है कि वैसे किसान जो कृषि यन्त्र खरीदने में सक्षम नहीं हैं उन्हें समय पर सस्ते दरों में किराये पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराया जा सके। आज जीविका कृषि यन्त्र बैंक अपने लक्ष्य एवं उद्देश्यों में सफल है। इन उद्देश्यों की पूर्ति में कृषि विभाग, बिहार सरकार द्वारा भी ट्रैक्टर एवं मशीनरी की खरीद में अनुदान दिया जा रहा है जो अत्यंत ही लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

कृषि यंत्र बैंक ने कृषि क्रांति का किया आगाज

जीविका दीदियों द्वारा संचालित कृषि यन्त्र बैंक ने गाँव–गाँव में कृषि क्रांति का आगाज़ किया है। लखीसराय जिला में कुल 6 कृषि यन्त्र बैंक कार्यरत है। बड़हिया में अनमोल जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ, चानन में नारी कल्याण जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ, सूर्यगढ़ा में सफल जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ, रामगढ़ चौक में उपकार जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ, हलसी में अधिकार जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ और लखीसराय सदर में लक्ष्य जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ में पिछले तीन वर्ष से कृषि यन्त्र बैंक कार्यरत हैं। हलसी प्रखंड अंतर्गत धीरा पंचायत में अधिकार जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ द्वारा नवंबर 2022 से कृषि यंत्र बैंक संचालित है। अपने छह महीने की कार्य अवधि में ही कृषि यन्त्र बैंक ने अपने क्षेत्र में कृषि क्रांति का आगाज़ किया है। साढ़े तेरह लाख रूपये की लागत से बैंक के लिए ट्रैक्टर, रोटावेटर, कल्टीवेटर, चौफ कटर, पोटैटो प्लांटर, तथा स्ट्रा रिपर की खरीददारी की गई है। इन मशीनों की मदद से किसानी और जीविका दीदियों को रोपनी और कटनी में काफी मदद मिल रही है। कल तक धीरा पंचायत अंतर्गत गांवो में खेती के लिए आधुनिक मशीन नहीं थे। लेकिन अब स्थिति बदल गई है। कृषि यन्त्र बैंक से कम किराये पर मिलने वाली आधुनिक मशीनों ने खेती की राह को आसान बना दिया है। अधिकार संकुल स्तरीय संघ से 6784 सदस्य जुड़ी हैं। कमोवेश सभी सदस्य कृषि कार्य से जुड़ी हैं। सभी सदस्य रोपनी और कटनी के समय में कृषि यन्त्र बैंक से मशीन लेकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी कर रही हैं, वहीँ कृषि यन्त्र बैंक को भी फायदा हो रहा है। महज छह माह में कृषि यन्त्र बैंक ने लगभग एक लाख रूपए की आय अर्जित की है। संकुल स्तरीय संघ से जुड़े सदस्य और मांग के अनुरूप किसानों को कृषि यन्त्र बैंक से उपकरण उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

शिमला मिर्च की खेती ने दिलाया सम्मान

कटिहार जिले के दलन पंचायत की मीना कुमारी अब किसी परिचय की मोहताज नहीं है। काली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी मीना कुमारी, कृषि के आधुनिक तरीकों को अपनाकर खेती को लाभकारी बनाया और समाज में सम्मान हासिल किया है। दीदी का पूरा परिवार वर्षों से कृषि पर ही निर्भर रहा है। आज भी घर की आमदनी का मुख्य स्रोत खेती ही है। लेकिन खेती की उन्नत विधि अपनाकर इन्होनें अपनी आमदनी में बढ़ोत्तरी की है।

इनके खेत में लगी शिमला मिर्च की फसल लोगों को कुछ ज्यादा ही आकर्षित कर रहा है। इस बार इनकी खेती देखने योग्य है। दिसम्बर 2022 में इन्होंने जीविका के सहयोग एवं प्रोत्साहन से अपने पच्चीस डिसमिल खेत में खेती के आधुनिक तरीके "मलचिंग व् स्टकिंग" पद्धति अपनाकर शिमला मिर्च की बोआई की। खेत की तैयारी से लेकर उन्नत बीज, वर्मी कम्पोस्ट, सिंचाई, मजदूरी एवं अन्य सामग्री की खरीद में कुल 31700 रुपए खर्च हुए। खेती के पूरे सीजन में इन्होनें कुल 3300 किलो शिमला मिर्च का उत्पादन किया और बीस से तीस रुपए रुपए प्रति किलो की दर से बेचा। अबतक खर्चा काटकर मीना ने 40900 रुपए की आमदनी की है।

मीना कुमारी का यह प्रयास गांव के किसानों के बीच चर्चा का विषय बन गया है। इनके पंचायत एवं अन्य जगहों से करीब 185 किसानों के द्वारा इनके खेत का भ्रमण किया गया एवं इनसे खेती के तकनीक के बारे में जानकारी ली गई। दीदी के द्वारा अपने परी शक्ति जीविका ग्राम संगठन के किसान दीदियों को खेती के इस पद्धति को अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है।

दीदी कहती हैं कि–'खेती की परम्परागत तरीके से तो उपज होती है पर खर्चा कम नहीं होता है। लेकिन खेती के आधुनिक तरीके "मलचिंग एवं स्अकिंग" पद्धति अपनाने से बीज–खाद के साथ–साथ पानी की भी कम जरुरत पड़ती है और फसल का उत्पादन भी अच्छा होता है।'

घर से ही शुरु की शराबबंदी की मुहिम

सकिला देवी शेखपुरा जिला के शेखोपुरसराय प्रखंड अंतर्गत बेलाव गाँव की रहने वाली है। सकिला दीदी का परिवार छोटा और काफी खुशहाल था। दीदी मजदूरी कर अपने बच्चों के साथ काफी खुश थी। दीदी के पति श्री कार्यानंद प्रसाद गाँव में ही एक छोटी सी दुकान करते थे, जिससे रोजमर्रा का सामान बेचकर रोजाना 200 से 300 रूपये कमा लेते थे। बुरे लोगों के संगत में पड़कर और ज्यादा लालच में आकर उसने अपनी गुमटी में शराब बेचना शुरू कर दिया। बेचने के साथ–साथ उन्होंने शराब पीना भी शुरू कर दिया। वह जो भी कमाते थे, आमदनी अधिकांश राशि शराब पीने में ही खर्च कर देते थे। शराब पीने के चक्कर में पति–पत्नी में अक्सर झगड़ा होने लगा था। दीदी इस घटना को समूह में और ग्राम संगठन में चर्चा की। दीदियों ने सकिला दीदी के पति को समझाया लेकिन उसने किसी की नहीं सुनी। बिहार में सरकार ने जब शराबबंदी की घोषणा की। तभी दीदी अपने पति को शराब बेचने से मना करने लगी लेकिन उनके पति मानने को तैयार नहीं थे। सकिला दीदी मन में ठानी कि मैं शराबबंदी का शुरुआत अपने घर से ही करुँगी। उन्होंने शराब पीने तथा शराब बेचने के रोकथाम के लिए समूह तथा ग्राम संगठन के माध्यम से जन जागरूकता अभियान चलाया। उनके पति ने उन्हें काफी प्रताड़ित भी किया, लेकिन दीदी ने हिम्मत नहीं हारी। दुकान और घर में छिपा कर रखे शराब की थैली और बोतलों को फोड़ कर नष्ट कर दिया। गाँव में इस कदर जागरूकता अभियान चलाया कि शराब बनाने वाले और बेचने वाले धन्धेबाजों में हडकंप मच गया तथा शराब का सेवन करने वाले भी सुधर गये। आज गाँव का माहौल अगर शांत है तो वो सिर्फ सकिला दीदी और उनकी जैसी जीविका दीदियों के मुहिम के कारण। सकिला दीदी और उनके पति ने फिर से अपने व्यवसाय को शुरू किया और धीरे–धीरे अपनी जिन्दगी को पटरी पर लाने का कार्य किया है।

बच्चों की पढ़ाई में मददगार बन रही विद्या दीदी

भागलपुर जिला के रंगरा चौक प्रखंड स्थित सागर जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ द्वारा संचालित 'सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरियर विकास केंद्र' में आस–पास के गांव के बच्चे प्रत्येक दिन आकर अध्ययन करते हैं। पुस्तकालय में अध्ययनरत बच्चों को उनकी आवश्यकतानुसार पुस्तकें उपलब्ध कराने से लेकर उन्हें सही मार्गदर्शन प्रदान वाली लुसी कुमारी विद्या दीदी की रूप में जानी जाती है। लुसी कुमारी को शुरुआत से ही पुस्तकों से गहरा लगाव था। वह हमेशा से अच्छी–अच्छी किताबें पढ़ने तथा उन्हें व्यवस्थित रखने की शौक़ीन रही हैं। ऐसे में जब उन्हें जीविका संकुल संघ द्वारा संचालित सामुदायिक पुस्तकालय में विद्या दीदी के रूप में काम करने का अवसर मिला तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। रंगरा प्रखंड अन्तर्गत बनिया गांव की रहने वाली लुसी कुमारी ने इतिहास विषय में स्नातकोत्तर किया है और अब वह प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही है। इसके साथ–साथ वह सामुदायिक पुस्तकालय में विद्या दीदी के रूप में काम करती है। इससे उन्हें अपनी पढ़ाई के लिए पूरा समय मिल जाता है साथ ही उन्हें मेहनताने के रूप में आर्थिक लाभ भी हो रहा है। इससे लुसी कुमारी को अपना भविष्य संवारने का अवसर मिलने के साथ ही वह आत्मनिर्भर भी बन गई है।

सामुदायिक पुस्तकालय में विद्या दीदी की रूप में काम करने वाली लुसी कुमारी पुस्तकालय से संबंधित सभी दैनिक गतिविधियों का संचालन करती है। वह प्रत्येक दिन पुस्तकालय में अध्ययन के लिए आने वाले बच्चों की उपस्थिति दर्ज करती है, पुस्तकों को व्यवस्थित रखती हैं, बच्चों को पुस्तक उपलब्ध कराती है एवं उन्हें पढ़ाई हेतु मार्ग निर्देशन देने के दायित्व का निर्वहन कर रही हैं। बच्चों को पढ़ाई में मदद और प्रोत्साहित करने की वजह से वह सचमुच बच्चों के लिए 'विद्या दीदी' बन गई है। लुसी बताती हैं कि–'इस पुस्तकालय में करीब 200 बच्चों का पंजीयन कराया गया है। इनमें से 40 से 50 बच्चे प्राय : प्रत्येक दिन अध्ययन के लिए यहां आते हैं।'

धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, बेगूसराय

एक समय था जब समाज में महिलाओं के लिए घर की दहलीज लांघना बड़ी बात थी और घूंघट ही उनकी पहचान हुआ करती थी। समय बदला, परिस्थितियां बदली और आज महिलाएँ घर से बाहर निकलकर अपने सफलता का परचम हर ओर लहरा रही हैं। जीविका के प्रयास से बेगूसराय जिला के ग्रामीण क्षेत्रों की हजारों महिलाएं स्वाबलंबी होकर अपनी एक नई पहचान स्थापित कर ली हैं। इन्हीं दीदियों द्वारा अब कंपनी का गठन कर उसका सफल संचालन भी किया जा रहा है। जीविका दीदियों द्वारा जीविकोपार्जन के संसाधनों को बढ़ाने तथा महिला किसानों के हाथों में उनके उत्पादों की बेहतर कीमत उपलब्ध कराने हेतु 'धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' का गठन 08 जुलाई 2019 को किया गया। कृषि उत्पादों की खरीद–बिक्री के साथ कई नवाचार भी इस कंपनी के द्वारा किये जा रहे हैं। यह कंपनी महिलाओं के द्वारा बनायी गयी है और इसका संचालन भी उन्हीं के कंधों पर है।

कंपनी का उद्देश्य छोटे एवं मध्यम वर्ग के महिला किसानों को उचित मूल्य पर खाद और बीज उपलब्ध करना है। साथ ही, उनके उत्पादों को बाजार एवं बेहतर कीमत उपलब्ध कराना है। जीविका से जुड़ी किसान दीदियाँ विभिन्न उत्पादक कंपनी से जुड़ कर खाद और बीज तथा अपने फसल को बेहतर मूल्य पर कंपनी को बिक्री कर लाभान्वित हो रही हैं। धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड में विभिन्न प्रखंडों के 282 जीविका दीदियाँ शेयर धारक हैं। वर्त्तमान समय में कंपनी द्वारा 5,000 से ज्यादा जीविका दीदियों को विभिन्न तरीकों से सहयोग प्रदान किया गया है।

कंपनी के द्वारा वित्तीय वर्ष 2022–23 के दौरान 420 मीट्रिक टन गेंहूँ, 530 मीट्रिक टन मक्का, 118 मीट्रिक टन सरसों, कुल 1068 मीट्रिक टन एग्री आउटपुट एवं 16 मीट्रिक टन एग्री इनपुट का व्यापार किया गया, जिसका कुल टर्न ओवर 2.39 करोड़ रूपये है। स्थापना काल के वित्तीय वर्ष 2019–20 में जहां कंपनी ने अपना कारोबार महज 3 लाख रूपये का किया था। आज यह बढ़कर 3.85 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है, जो एक बड़ी उपलब्धि है।

कंपनी के द्वारा तेल प्रसंस्करण उद्योग में संभावनाओ को देखते हुए 'कच्ची घानी सरसों तेल' बनाने एवं इसके विपणन हेतु रणनीति पर कार्य किया जा रहा है। कच्ची घानी सरसों तेल 'धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' द्वारा जीविका के ब्रांड नेम 'ग्रीन डिलाईट' के नाम से बाजार में उपलब्ध कराया जा रहा है। बाजार की व्यवस्था एवं जरूरतों को ध्यान में रखकर कच्ची घानी सरसों तेल का उत्पादन भंडारण एवं विपणन के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु कंपनी प्रयासरत है। धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड को जीविका परियोजना द्वारा सरसों तेल के कच्ची घानी प्रसंस्करण उद्योग की स्थापना हेतु 1.36 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गयी है। वहीं, बियाडा द्वारा लीज पर 40,000 स्क्वायर फीट जमीन कंपनी को उपलब्ध करवाया गया है।

धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, बेगूसराय : एक नजर में

1	कंपनी का नाम–	धान्यक जीविका एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड
2	अंशधारकों की सदस्यों–	282
3	कंपनी द्वारा कुल खरीद एवं बिक्री–	1458 मीट्रिक टन
4	कंपनी द्वारा कुल व्यावसाय–	3.85 करोड़
5	इकाई का नाम–	कच्ची घानी तेल प्रसंस्करण इकाई

6	कच्चा माल की जरूरत–	सरसों
7	मुख्य उत्पाद का नाम–	कच्ची घानी सरसों तेल
8	संस्थापित क्षमता–	1.6 मीट्रिक टन/घंटा
9	उत्पादक क्षमता–	700 मीट्रिक टन/वर्ष
10	जमीन की उपलब्धता–	40,000 स्क्वायर फीट

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार